COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 20-04-2020

DIFFERENTLY ABLED

निःशक्तजन

जो व्यक्ति शारीरिक या मानसिक तौर पर अक्षम हो उसे निःशक्तजन (DIFFERENTLY ABLED) कहते है|अंग्रेजी में निःशक्त या विकलांग शब्द कि व्याख्या शुरुआत में हैंडिकैप्ड या डिसेबल के रूप में की जाती है | आगे चलकर १९८० के दशक में इस परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया गया | अमेरिका के डेमोक्रेटिक नेशनल कमेटी ने विकलांगो के लिए हैंडिकैप्ड की जगह डिफरेंटली एबल्ड शब्द के इस्तेमाल पर जोर दिया जो अपने पूर्ववर्ती शब्द हैंडिकैप्ड या डिसेबल की तुलना में ज्यादा स्वीकार हुआ | निःशक्तजनों की भावनाओं को समझते हुए उन्हें एक सौम्य और करुणामई शब्द से नवाज कर इस समिति ने अपनी अतिरिक्त योग्यता का प्रमाण प्रस्तुत किया |

अधिनियम १९९५ कि धारा-२ के तहत निःशक्तता को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है -

(1) अन्धता :- अन्धता उस अवस्था को निर्दिष्ट करती है जहाँ कोई व्यक्ति निम्नलिखित अवस्था में से किसी में ग्रसित है -

(i) दृष्टि का पूर्ण अभाव |

(ii) सुधारक लेंसों के साथ बेहतर नेत्र में दृष्टि कि तिछ्गता जो ६/६० या २०/२००(स्नेलन) में अधिक न हो |

(iii) दृष्टि क्षेत्र कि सीमा जो २० डीग्री कोण वाली या उससे तदन्तर हो |

(2) कम दृष्टि - कम दृष्टि वाला व्यक्ति से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जिसकी उपचार या मानक अपवर्तनीय संशोधन के पश्चात भी दृष्टि छमता का ह्रास हो गया है किन्तु जो समुचित सहायक युक्ति से किसी कार्य की योजना या निष्पादन के लिए दृष्टि का उपयोग है या उपयोग करने में संभाव्य रूप से समर्थ है |

COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 21-04-2020

DIFFERENTLY ABLED

निःशक्तजन

(३)कुष्ठरोगमुक्त :- कुष्टरोगमुक्त व्यक्ति से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो कुष्ठ से रोगमुक्त हो गया है किन्तु -

(I) हाथों या पैरों में संवेदना की कमी और नेत्र और पलक में संवेदना की कमी और आंशिक घात से ग्रस्त किन्तु प्रकट विरूपता से ग्रस्त नही |

(II) प्रकट विरूपता और आंशिक घात से ग्रस्त है,किन्तु उसके हाथों और पैरों में पर्याप्त गतिशीलता है ,जिससे वह सामान्य आर्थिक क्रियाकलाप कर सकता है |

(III)अत्यंत शारीरिक विरूपता और अधिक वृद्धावस्था से ग्रस्त है जो उसे कोई भी लाभपूर्ण उपजीविका चलने से रोकती है और कुष्ठ रोग मुक्त पद का अर्थ तदानुसार लगाया जायेगा |

(IV)श्रवण शक्ति का ह्रास :- श्रवण शक्ति का ह्रास से अभिप्रेत है संवाद सम्बन्धी रेंज की आवृति में बेहतर कर्ण में साठ डेसिबल या अधिक हानि|

(V) चलन निःशक्तता :- चलन निःशक्तता से हड्डियों ,जोड़ों या मांसपेशियों की कोई ऐसी निःशक्तता अभिप्रेत है,जिससे अंगों की गति में पर्याप्त निबंधन या किसी प्रकार का प्रमस्तिष्क घात हो |

(VI) मानसिक मंदता :- मानसिक मंदता से अभिप्रेत है , किसी व्यक्ति के चित्त की अवरुद्ध या अपूर्ण विकास की अवस्था जो विशेष रूप से बुद्धि की अवसामान्यता द्वारा अभिलक्षित होती है

(VII)मानसिक रुग्णता :- मानसिक रुग्णता से मानसिक मंदता से भिन्न कोई मानसिक विकार अभिप्रेत है, निःशक्त व्यक्ति से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जो किसी चिकित्सा अधिकारी द्वारा प्रमाणित किसी निःशक्तता के कम से कम चालीस प्रतिशत ग्रस्त है |

COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 22-04-2020

SPECIAL EDUCATION

विशेष शिक्षा

किसी कक्षा में विभिन्न तरह के बच्चे होते है जिनकी अपनी आवश्यकताएं होती है कुछ बच्चों की सुनने की शक्ति कम होती है, कुछ मंद बुद्धि वाले होते है तथा कुछ अक्षर को उल्टा लिखते है| सभी बच्चे सामान्य गति से नही सीख पाते है| कुछ का उच्चारण स्पष्ट नही हो पाता जिसके कारण इन बच्चों का विकास एवं दैनिक कार्यशीलता प्रभावित होती है| इन्ही भिन्नताओं के कारण इन विशिष्ट बालकों के पालन पोषण में कुछ विशेष तरीके अपनाने होते है तथा उनकी शिक्षा के लिए विशेष योजना बनानी पड़ती है जिससे उनके अनुकूलतम विकास को बढ़ावा मिले |

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की पहचान :-सामान्य रूप से कार्य करने के लिए छह छेत्र निर्णायक है| ये है -दृष्टि,श्रवण शक्ति,गतिशीलता,सम्प्रेषण,सामाजिक-भावनात्मक सम्बन्ध,बुद्धिमता| इसके अतिरिक्त आर्थिक रूप से आर्थिक रूप से सुविधावंचित बच्चे भी विशेष है क्योंकि गरीबी के कारण वे जीवन के कई अनुभवों से वंचित रह जाते है | वे स्कूल नहीं जा सकते क्योंकि उन्हें बचपन से ही काम शुरू करना पड़ता है, ताकि वे परिवार की आय बढा सके | कोई भी बच्चा या व्यक्ति जो इन छेत्रों में से किसी एक या उससे अधिक छेत्रों में कठिनाई महसूस करता है,वह विशिष्ट बच्चा या व्यक्ति कहलाता है |उपरोक्त में से किसी एक छेत्र में कठिनाई व्यक्ति के लिए बाधा उत्पन्न कर सकती है और व्यक्ति को इस असमर्थता से निपटने के लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता होती है |

विशिष्ट शिक्षा की परिभाषाएँ :- ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया(१९९१) ने विशिष्ट शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है -'विशेष शिक्षा उन लोगों को गैरपरम्परागत निर्देशन सेवाएं प्रदान करती है जो परम्परागत शिक्षण अभ्यास से अधिकतम लाभ नहीं ले सकते | इनमे उन लोगों को सम्मिलित करते है जो शारीरिक रूप से अक्षम,संवेगात्मक अयोग्य,बौद्धिक छमता से भिन्न,वाणी दोष,व्यवहारिक अव्यवस्थित होते है | विशिष्ट निर्देशन सेवा के अंतर्गत विशिष्ट शिक्षण तकनीकी, उपकरण सामग्री,सुविधाएँ तथा सहायक सेवाएं सम्मिलित है |

द वर्ल्ड बुक इन्सैक्लोपिडिया में कहा गया है कि- (१९९२)विशेष शिक्षा,विशिष्ट एवं प्रतिभाशाली लोगों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराती है | अधिकांश देशों में विशेष शिक्षा के कार्यक्रम उन लोगों के लिए लागू किये गए है जो अन्धे,बहरे,संवेगात्मक रूप से परेशान,शारीरिक रूप से विशिष्ट या मानसिक रूप से विशिष्ट होते है |कुछ स्थानीय स्कूलों में प्रतिभाशाली छात्रों को भी शिक्षा दी जाती है |
उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि विशिष्ट शिक्षा एक ऐसा अनुदेशन है जो बालकों कि उन,विशिष्ट विशेषताओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संगठित किया जाता है जिनकी पूर्ति सामान्य विद्यालयी पाठ्यक्रम द्वारा संभव नही होती है | इसके लिए विशिष्ट शिक्षा का उद्देश्य विशिष्ट रूप से निर्धारित करना होता है |

COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 23-04-2020

SPECIAL EDUCATION

विशेष शिक्षा

विशिष्ट शिक्षा के उद्द्येश्य :-

विशिष्ट शिक्षा हेतु निम्नलिखित उद्द्येश्य निर्धारित किये जा सकते है -

(1) विशिष्ट शिक्षा का प्रमुख उद्द्येश्य गंभीर रूप से शारीरिक अक्षमता वाले छात्रों को स्वयं अपनी सहायता करने व देखभाल करने कि कुशलता को विकसित करना होता है |

(2) विशिष्ट बालकों में ऐशी कुशलताएँ विकसित करना जिससे वे परम्परागत कक्षाओं में दी जाने वाली शिक्षा का लाभ प्राप्त कर सकें | उदहारण हेतु अन्धे बालक जो ब्रेल लिपि पढ़ सकते है उन्हें इस योग्य बनाना कि वह शिक्षा के विभिन्न सामान्य कार्यक्रमों में सुविधा से भाग ले सकें |

(3) शारीरिक विकलांग बालकों कि बाधाएं दूर कर सामान्य बालकों की भांति शिक्षा सुविधाएँ प्रदान की जा सकें |

(4) विशिष्ट शिक्षा का उद्देश्य विशिष्ट बालकों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है |

(5) सामान्य बालकों की भांति शिक्षा के सभी अवसर सुलभ कराना, जिससे उनकी अक्षमता उनके विकास में कहीं बाधक न बने और कोई भी व्यक्ति अपनी अक्षमता या विशिष्टता के कारण कार्य करने से वंचित न रहे |

(6) सामान्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त इनके लिए विशिष्ट क्रियाकलापों का आयोजन कर विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करना | जिससे आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके |

विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता :-

विशिष्ट बालकों में बहुत सारी विशिष्टताएं हो सकती है या फिर उनमे कुछ आधाभूत विशिष्ट छमतायें होती है | जिसके लिए प्रायः सामान्य शैक्षिक कार्यक्रमों के लाभों में से सभी का लाभ उन तक नही पहुच सकता है , अतएव उनके लिए शिक्षा के विशेष कार्यक्रम करने पड़ते है जो उनकी छमताओं के अनुरूप है | विशिष्ट बालक अपनी विशेषताओं के कारण ही सामान्य रूप से दी जाने वाली शिक्षा का लाभ नही उठा पाते | सामान्य कक्षा में सामान्य बालकों के साथ दी जाने वाली सामान्य शिक्षा उनके लिए उपयोगी संभव नहीं होती | उन्हें अपनी क्षमताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की आवश्यकता होती है | ऐसा तभी संभव है जब उनके लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था हो |

विभिन्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए विशेष शिक्षा की आवश्यकता को निम्नलिखित बिंदुओं में वर्णित किया जा सकता है |

(1) संपूर्ण मानवीय शक्ति का सदुपयोग

(2) मानसिक ग्रंथियों, कुंठाओं व नैराश्य को कम करने के लिए

(3) समायोजन हेतु

(4) समुचित विकास हेतु

COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 24-04-2020

INCLUSIVE EDUCATION

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा का अर्थ सभी विद्यार्थियों को समान शिक्षा देना प्रदान करना है इस शिक्षा में सभी बच्चों को सामान रूप से शिक्षा दी जाती है| सभी बच्चों से अर्थ: उनमें कुछ विशिष्ट बालक हो सकते है |शारीरिक विकलांग या कोई शारीरिक कमियां हो जैसे,सुनाई न देना,चलने में कठिनाई,मानसिक विकलांग या लिखने पढ़ने में कठिनाई महसूस करना| समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विशिष्ट बच्चों की छुपी हुई योग्यता को उभारना है |आज केवल प्रतिभाशाली बच्चों को ही बढ़ावा न दिया जाय बल्कि सभी प्रकार से कमजोर या पिछड़े बच्चों अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति पर उचित ध्यान दिया जाए ताकि वह देश की मुख्यधारा में आकर अपना विकास करे और देश की उन्नति में योगदान दे सके | प्रतिभाशाली बच्चा जिसको सबकुछ आता है और सबकुछ जल्द सीख जाता हो | ऐसे बच्चों के लिए भी कोई अलग स्कूल नही होना चाहिए अपितु इन सभी बच्चों के लिए एक ही स्कूल होना चाहिए |

समावेशी शिक्षा को मुख्यतया तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(1)PHYSICAL DISABILITY (शारीरिक,मानसिक विकलांग)

(2)LEARNING DISABILITY (अधिगम अक्षमता)

(3)CHILDREN FROM: (1) SCHEDULED CASTE(अनुसूचित जाति)

(2)SCHEDULE TRIBE (अनुसूचित जनजाति)

(3) ECONOMILLY WEAKER (निर्धन एवं पिछड़े)

इन तीनों बिंदुओं में समावेशी शिक्षा को देखा जा सकता है |

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य :-

समावेशी शिक्षा के मुख्या उद्देश्य निम्नलिखित है |

(1) बच्चों में विशिष्ट बच्चों की पहचान करना और किसी भी प्रकार की असमर्थता का पता लगाकर उनको दूर करने की कोशिश करना |

(2) विशिष्ट बच्चों को आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ना|

(3) लोकतान्त्रिक मूल्यों के उद्देश्यों को प्राप्त करना |

(4) जागरूकता की भावना का विकास करना |

(5) बच्चों में आत्मनिर्भरता का विकास करना आदि |

COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER

SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

LECTURE DATE- 25-04-2020

INCLUSIVE EDUCATION

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा का महत्व :-

समावेशी शिक्षा का महत्व निम्न है -

(१)समावेशी शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए उचित उम्मीदों के साथ, उसकी व्यक्तिगत शक्तियों का विकास करती है |

(२)समावेशी शिक्षा अन्य छात्रों को अपनी उम्र के साथ कक्षा के जीवन में भाग लेने और व्यक्तिगत लक्ष्यों पर काम करने हेतु अभिप्रेरित करती है |

(३)समावेशी शिक्षा बच्चों को उनके शिक्षा के क्षेत्र में और उनके स्थानीय स्कूलों की गतिविधियों में उनके माता-पिता को भी शामिल करने की वकालत करती है |

(४)समावेशी शिक्षा सम्मान और अपनेपन की स्कूल संस्कृति के साथ-साथ व्यक्तिगत मतभेदों को स्वीकार करने के लिए भी अवसर प्रदान करती है

(५)समावेशी शिक्षा अन्य बच्चों ,अपने स्वयं की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के साथ प्रत्येक का एक व्यापक विविधता के साथ दोस्ती का विकास करने की क्षमता विकसित करना |

इस प्रकार समावेशी शिक्षा समाज के सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की बात का समर्थन करती है | यह सही मायनों में सर्व शिक्षा जैसे शब्दों का रूपांतरित रूप है जिसके कई उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा'| सामान्यतया यह देखा जाता है कि समावेशी शिक्षा का अर्थ केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों कि शिक्षा से लगाया जाता है जो कि सर्वथा अनुचित है क्योंकि समावेशी शिक्षा का एक उद्देश्य तो 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों कि शिक्षा से हो सकता है लेकिन इसका सम्पूर्ण उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों कि शिक्षा कदापि भी नही हो सकता है |